PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

क्रिया

- परिभाषा - जिस शब्द के द्वारा किसी कार्य के होने अथवा करने का बोध हो, क्रिया कहलाती है

  जैसे -

  राम दूध पी रहा है।

  इसमे पी रहा है शब्द कार्य का बोध करा रहे है। जिससे किसी कार्य के होने का बोध होता है।
- धातु (Root) – क्रिया का मूल रूप धातु कहलाता है।

  जैसे –

  लिख, पढ़, जा, रो, पा आदि। इन्हीं से लिखता है, पढ़ता है, जाता है, रोता है आदि क्रियाएँ बनती हैं

धातु के रूप

1. सामान्य धातु - जिसमे मूल धातु मे 'ना' जोड़कर क्रिया रूप बनता है

   जैसे -

   लिखना, पढ़ना, सोना आदि
2. व्युत्पन्न धातु - सामान्य धातु मे कोई प्रत्यय लगाने पर बनता है

   जैसे -

   पीना(सामान्य धातु) पिलाना, पिलवाना (व्युत्पन्न धातु)

   खाना (सामान्य धातु) खिलाना, खिलवाना (व्युत्पन्न धातु)
3. नाम धातु - संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण शब्दो में प्रत्यय लगाकर जो धातु व्युत्पन्न होती है

   जैसे -

   संज्ञा शब्दो से - शर्म से शर्माना, बात से बतियाना

   सर्वनाम शब्दो से - आप से अपनाना

   विशेषण शब्दो से - गरम से गरमाना, दोहरा से दोहराना
4. संमिश्र धातु - जब सज्ञा, विशेषण या क्रिया विशेषण शब्दो के आगे 'करना' या 'होना' शब्द जोड़े जाते है

   जैसे -

   काम + होना - काम होना

   पसंद + होना - पसंद होना

   धीरे + करना - धीरे करना

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

5. अनुकरणात्मक धातु - ध्वनियों के अनुकरण पर बनायी जाने वाली धातुएँ अनुकरणात्मक कहलाती है

जैसे -

हिनहिन से हिनहिनाना, खटखट से खटखटाना

कर्म के आधार पर क्रिया 2 प्रकार है -

(क) अकर्मक क्रिया - वाक्य में जो क्रिया कर्म की अपेक्षा नहीं रखती, अकर्मक क्रिया कहलाती है।

जैसे-

चलना, फिरना, दौड़ना, रोना आदि।

(ख) सकर्मक क्रिया- वह क्रिया जो वाक्य में कर्म की अपेक्षा करती है अर्थात् (जिनके प्रयोग में कर्म की आवश्यकता होती है) वह सकर्मक क्रिया कही जाती है।

जैसे-

पढ़ना, लिखना, खाना, पीना, देना, लेना आदि।

- ध्यान दें -

अकर्मक और सकर्मक क्रिया की पहचान -

वाक्य मे 'क्या' प्रश्न कीजिए। यदि क्या प्रश्न करने पर उत्तर मे कोई निर्जीव वस्तु या पदार्थ प्राप्त होता है, तो वह किया सकर्मक है, अन्यथा अकर्मक

जैसे -

दिनेश खाना खा रहा है। (क्या खा रहा है? - खाना) सकर्मक

प्रिया सो रही है -(क्या सो रही है? - x) अकर्मक

अकर्मक तथा सकर्मक के भेद-प्रभेद

अकर्मक क्रिया-

- अकर्मक क्रिया मे कर्म की अपेक्षा नहीं होती। ये दो प्रकार की होती हैं-

(i) पूर्ण अकर्मक तथा (i) अपूर्ण अकर्मक।

(i) पूर्ण अकर्मक- 'पूर्ण' से तात्पर्य इतना ही है कि ये अपने में ही पूर्ण होती हैं। इन्हें अपनी पूर्णता व्यक्त करने के लिए किसी पूरक की आवश्यकता नहीं पड़ती। जैसे सोना, दौड़ना, हँसना, जाना, आना सभी अकर्मक क्रियाएँ हैं तथा अपना अर्थ व्यक्त करने में स्वतः पूर्ण हैं।

जैसे-

1. बच्चा रो रहा है। (रोने की स्थिति या अवस्था का बोध)
2. लड़की हँस रही है। (हँसने की अवस्था का बोध)
3. वे सो रहे हैं। (सोने की अवस्था स्थिति का बोध)

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

(ii) अपूर्ण अकर्मक-ये क्रियाएँ वाक्य में स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होकर अपना अर्थ पूर्ण रूप में व्यक्त नहीं कर पातीं। इस पूर्णता के लिए इनको कर्ता से संबंध रखने वाले किसी पूरक शब्द की आवश्यकता पड़ती है। होना, बनना, निकलना इसी प्रकार की क्रियाएँ हैं जो अर्थ की पूर्णता के लिए पूरक का सहारा लेती हैं,

जैसे-

1. बच्चा बीमार है।
2. शीला बेईमान है।
3. वह बेईमान निकली।
4. वह ईमानदार लगा।

यदि इन वाक्यों में बीमार, ईमानदार, बेईमान आदि पूरक शब्दों का प्रयोग न किया जाए तो जो वाक्य अधूरा लगता है। पूरक के स्थान पर प्रायः विशेषण तथा संज्ञा का प्रयोग किया जाता है।

सकर्मक क्रिया:

- जिस प्रकार अकर्मक क्रियाओं के अर्थ को स्वतः पूर्ण रूप में व्यक्त करने या न करने के आधार पर पूर्ण तथा अपूर्ण दो भेद होते हैं सकर्मक के भी 2 भद है -

(i) पूर्ण सकर्मक

(ii) अपूर्ण सकर्मक

(i) पूर्ण सकर्मक - वे सकर्मक क्रियाएँ जो अपने अर्थ को स्वतः पूरी तरह से व्यक्त कर पाने में समर्थ हैं, पूर्ण सकर्मक कही जाती हैं।

जैसे-

1. शीला गाना गा रही है।
2. मोहन अखबार पढ़ रहा है।
3. वे अमरूद खा रहे हैं।

यहाँ 'गाना', अखबार','अमरूद' कर्म हैं जो क्रिया पर 'क्या' के प्रश्न के उत्तर में निर्जीव संज्ञा के रूप में प्राप्त होते हैं। इनको 'प्रत्यक्ष कर्म' कहा जाता है।

(ii) अपूर्ण सकर्मक क्रिया- जिन सकर्मक क्रियाओं में कर्म के रहते हुए भी अर्थ को पूरी तरह से व्यक्त नहीं किया जा सकता, वे अपूर्ण सकर्मक कही जाती हैं। अर्थ की पूर्णता के लिए ये क्रियाएँ कर्म से संबंधित एक अन्य शब्द (कर्म पूरक) का सहारा लेती हैं। मानना, समझना, चुनना, बनाना आदि ऐसी ही क्रियाएँ हैं।

नीचे के उदाहरण देखिए :

1. आपने मुझे प्रतिनिधि क्यों चुना?

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

2. वह शीला को मूर्ख समझता है।
3. वह मोहन को अपना पति नहीं मानती।

- इन वाक्यों में पूरक (कर्म पूरक), (प्रतिनिधि, मूर्ख, पति) का यदि लोप कर दिया जाए तो वाक्य अधूरा-सा प्रतीत होता है। यहाँ प्रतिनिधि का संबंध कर्म 'मुझे से है, मूर्ख का संबंध कर्म 'शीला' से है और 'पति' का संबंध कर्म 'मोहन' से है। इस कारण ये पूरक कर्मपूरक कहे जाते हैं।

- विशेष - यह आवश्यक नहीं होता कि सकर्मक क्रियाओ मे कर्म का प्रयोग हुआ हो - देखना, खाना, पीना, सुनना, लेना, देना, बताना, बनाना जैसी सकर्मक क्रियाओं मे यदि कर्म का प्रयोग न भी हुआ हो अर्थात वह छुपा हुआ हो, तो भी क्रिया अकर्मक नहीं मानी जाती

  जैसे -

  बच्चा खा रहा है। (कुछ न कुछ तो खा रहा होगा।)

  लड़की पी रही है। (कुछ न कुछ तो पी रही होगी।)

  - विशेष- जो क्रियाएँ अपना अर्थ पूर्ण रूप से व्यक्त करने के लिए किसी शब्द (कर्ता-पूरक, या कर्म-पूरक) की अपेक्षा रखती हैं, उन्हे अपूर्ण क्रियाएँ कहा जाता है अपूर्ण क्रिया के अर्थ को पूर्ण करने के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें पूरक कहते हैं।
  - होना, बनना, निकलना, लगना आदि अकर्मक क्रियाओं को अपना अर्थ व्यक्त करने के लिए कर्ता के पूरक के रूप मे किसी अन्य शब्द का सहारा लेना पड़ता है।
  - चुनन, बनाना, समझना, मानना आदि सकर्मक क्रियाओं के अपना अर्थ व्यक्त करने के लिए कर्म के पूरक के रूप किसी अन्य शब्द का सहारा लेना पड़ता है।

रचना की दृष्टि से क्रिया 2 प्रकार की होती है -

मूल क्रिया/सरल क्रिया/रूढ़ क्रिया -

- वे क्रिया रूप जो भाषा में धातु से उत्पन्न हुई हैं और न ही एकाधिक क्रिया रूपों के योग से बनी हैं, अतः इन्हें मूल क्रिया भी कहा जाता है

  जैसे-

  आना, जाना, पढ़ना, लिखना, पीना आदि।

यौगिक क्रिया -

- जो एक से अधिक तत्वो से मिलकर बनती है।

  जैसे-

  खाना से खिलाना, पीना से पिलाना

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

संरचना (प्रयोग) की दृष्टि से क्रिया के भेद

(1) सामान्य क्रिया - जहाँ केवल एक क्रिया का प्रयोग होता है, वह सामान्य क्रिया कहलाती है।

जैसे-

(i) आप आए

(ii) वह नहाया आदि।

(2) संयुक्त क्रिया - जहाँ दो अथवा अधिक क्रियाओं का साथ-साथ प्रयोग हो, वे संयुक्त क्रिया कहलाती है।

जैसे-

(i) कविता महाभारत पढ़ने लगी।

(ii) वह खा चुका है।

(iii) उसने खा लिया।

- विशेष - संयुक्त क्रियाओं मे पहली मूल क्रिया होती है, जबकि दूसरी क्रिया सहायक क्रिया का काम करती है, क्योंकि वह अपने मूल अर्थ को छोड़करक मुख्य क्रिया के अर्थ का विस्तार करती है। इन्हे रंजक क्रिया भी कहते है।

  हिन्दी मे आना, जाना, उठना, बैठना, लेना, देना, पड़ना, डालना आदि रंजक क्रियाएँ है।

- ध्यान रखिए -

  कुछ रंजक क्रियाओं को मुख्य क्रिया के रूप मे भी प्रयोग किया जा सकता है, जैसे -

रंजक क्रिया	मुख्य क्रिया के रूप मे	रंजक क्रिया के रूप मे
आना	वे आये।	तुम खेल आए?
जाना	वे जाते है।	बिल्ली दूध पी जाती है।

(3) नामधातु क्रिया - संज्ञा, सर्वनाम, अथवा विशेषण शब्दों से बने क्रियापद नामधातु क्रिया कहलाते हैं।

जैसे-

हथियाना, शर्माना, अपनाना आदि।

(4) प्रेरणार्थक क्रिया-जिस क्रिया से यह पता चले कि कर्ता स्वयं कार्य को न करके किसी अन्य को उस कार्य को करने की प्रेरणा देता है, वह प्रेरणार्थक क्रिया कहलाती है। ऐसी क्रियाओं के दो कर्त्ता होते हैं-

(i) प्रेरक कर्ता- प्रेरणा प्रदान करने वाला

(ii) प्रेरित कर्ता - प्रेरणा लेने वाला।

प्रेरणार्थक के 2 प्रकार होत है -

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

1. प्रथम प्रेरणार्थक - जब कर्ता स्वंय कार्य मे सम्मिलित होता हुआ प्रेरणा देता हो।

जैसे -

स्नेहा बच्चे को पानी पिलाती है।

रमेश बच्चे को चलाता है।

2. द्वितीय प्रेरणार्थक - जब कर्ता स्वयं कार्य नहीं करता तथा दूसरे को कार्य करने की प्रेरणा देता है

जैसे -

डाक्टर नर्स से रोगी को दवाई पिलवाता है।

अंकित अपने भाई से बच्चे को पिटवाता है।

(5) पूर्वकालिक क्रिया- जिस क्रिया का पूरा होना दूसरी क्रिया के पूरा होने से पूर्व पाया जाए. तो वह पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है।

जैसे -

सुनीता खाना खाकर सो गयी।

मोहन नहाकर चला गया।

मैं अभी सोकर उठा हूँ।

- विशेष- पूर्वकालिक क्रिया या तो क्रिया के सामान्य रूप में प्रयुक्त होती है अथवा धातु के अंत में 'कर' अथवा 'करके' लगा देने से पूर्वकालिक क्रिया बन जाती है।

उदाहरण -

(1) बच्चा दूध पीते ही सो गया।

(2) लड़कियाँ पुस्तकें पढ़कर जायेंगी।

(3) राम चित्र देखकर हँसने लगा।

(6) कृतंद क्रिया - जब शब्दो के अंत मे प्रत्यय या शब्दांश जोड़कर क्रियाओं का निर्माण किया जाता है तो इस प्रकार बनी क्रियाएँ कृदंत क्रियाएँ कहलाती है

जैसे -

पढ़ + ता - पढ़ता

पढ़ + कर - पढ़कर

कृदंत क्रिया 4 प्रकार की होती है -

1. वर्तमानकालिक
2. भूतकालिक
3. पूर्वकालिक
4. क्रियार्थक

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

1. वर्तमानकालिक - 'ता' प्रत्यय लगाने से बनता है (स्त्रीलिंग मे 'ती' तथा बहुवचन मे 'ते' प्रयोग होता है)

   जैसे -

   लिख + ता - लिखता

   देख + ती - देखती

   पढ़ + ते - पढ़ते

2. भूतकालिक - धातु मे 'आ' लगाने से (स्त्रीलिंग मे 'ई' तथा बहुवचने मे 'ए' जोड़ते है)

   जैसे -

   खा + आ - खाया

   पढ़ + ई - पढ़ी

   लड़ + ए - लड़े

3. पूर्वकालिक - धातु के साथ अंत मे कर, करके लगाने से

   जैसे-

   खा + कर - खाकर

   ले + कर - लेकर

4. क्रियार्थक - धातु के साथ 'ना' जोडने पर

   जैसे -

   जा + ना - जाना

   आ + ना - आना

   विशेष - कभी -कभी सकर्मक क्रियाएं अकर्मक रूप भी प्रयोग की जाती है

   जैसे -

सकर्मक क्रिया	सकर्मक क्रिया के रूप मे	अकर्मक क्रिया के रूप मे
पढ़ना	वह पुस्तक पढ़ता है	वे बच्चे इस विद्यालय मे पढ़ते है

अर्थ(वृत्ति) के आधार पर क्रिया के प्रकार -

1. निश्चयार्थ
2. संदेहार्थ
3. आज्ञार्थ
4. संकेतार्थ
5. संभावनार्थ

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

1. निश्चयार्थ - क्रिया के जिस रूप मे कार्य के निश्चि रूप से होने का बोध हो,

   जैसे -

   राम पढ़ता है।

   प्रिया नाच रही है।

   रमेश खाना खा रहा है।

2. संदेहार्थ - क्रिया के जिस रूप मे कार्य, व्यापार होने मे संदेह प्रकट हो

   जैसे -

   रमेश पढ़ रहा होगा।

   वह घर आता ही होगा।

3. आज्ञार्थ - क्रिया के जिस रूप मे आज्ञा, उपदेश, अनुरोध, इच्छा, निषेध आदि का बोध हो

   जैसे -

   सबसे प्रेम करो। - उपदेश

   आप सदा सुखी रहें। - इच्छा

   इधर मत आना । - निषेध

   यहाँ से बाहर चले जाओ। - आज्ञा

   कृपया मेरी सहायता करें। - अनुरोध

4. संकेतार्थ - क्रिया के जिस रूप मे एक क्रिया किसी दूसरी क्रिया पर निर्भर हो

   जैसे -

   यदि तुम आते तो मैं भी चलता।

   यदि विद्यालय खुलता तो हम पढ़ने जाते।

5. संभावनार्थ - क्रिया के जिस रूप मे अनुमान, संभावना आदि का बोध हो

   जैसे -

   शायद आज वर्षा हो।

   संभवतः वह कल आये।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090